अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर–272202

सुशील कुमार तिवारी
आचार्य एवं विशेष कार्याधिकारी
अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र

मो0नं0: 9140318839,
9415245707
ईमेलः skt_gpu@yahoo.com

पत्रांकः मेमो/अ0बौ0के0/01/2020 दिनांक 15.04.2020

'कोरोना' आज एक विश्वव्यापी समस्या के रूप में हमारे सामने उपस्थित है जिस पर सर्वत्र न केवल विमर्श चल रहा है, बल्कि उसके साथ इस महामारी पर विजय प्राप्त करने हेतु तात्कालिक भौतिक प्रयास भी गम्भीरता से हो रहे है। 'अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र', प्रो0 सुरेन्द्र दुबे, कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के कुशल एवं मानवीय संवेदना से युक्त नेतृत्व में, इस दिशा में अपने उत्तरदायित्व को समझते हुये सिद्धार्थ विश्वविद्यालय से जुड़े समस्त लोगों एवं संस्थाओं के साथ–साथ, समस्त मानव मात्र के लिये अत्यंत विनम्रता के साथ अपने कुछ विचार रखना चाहता है, जिससे हम सभी इस संकट की घड़ी में अपनी मानसिक एवं चैतसिक अवस्था को अक्षुण्ण रख सकें।

बुद्ध न ही कोई समाज सुधारक थे और न ही कोई तत्त्ववेत्ता दार्शनिक; जो केवल अमूर्त चिन्तन में रत हो अपितु वें, जैसा उन्होंने स्वयं के लिये कहा था– एक वैद्य–चिकित्सक थें। बुद्ध को 'महाभिषक' की संज्ञा से भी अभिहित किया गया था। बुद्ध की देशना का प्रस्थान विंदु यही है कि 'दुःख है'। ***जीवन में दुःख है यह कोई तत्त्वमीमांसीय निष्कर्ष नहीं है बल्कि यह हम सभी का यथार्थ, जीवन्त अनुभव है।*** दुःख की यथार्थता को स्वीकार करने का आशय यह नहीं है कि बुद्ध दुःखवादी थे अथवा उनका दर्शन नैराश्य का दर्शन है। स्थिति ठीक इसके विपरीत है। जब हम जीवन को जैसा वह है, उस रूप में जान लेते है तभी जीवन की समस्त उदात्तता, उसकी गरिमा हमारे समक्ष उद्घाटित हो जाती है। कैसे?

मानव चिंतन के इतिहास में महाभिषक बुद्ध प्रथम वैज्ञानिक चिंतक थें क्योंकि उन्होंने विज्ञान के इस स्थापना को चिंतन में स्थान दिया कि प्रत्येक घटना–तथ्य बिना कारण के नहीं होता अर्थात् यदि जीवन में दुःख एक तथ्य के रूप में उपस्थित है तो निश्चित ही इसका कोई न कोई कारण अवश्य होगा और यदि हम कारण को जान ले तो उसके निवारण के पश्चात् दुःख निवृत्ति की अवस्था प्राप्त कर सकते है तथा इस अवस्था को प्राप्त करने का मार्ग भी सहज ज्ञात हो जाता हैं।

'कोरोना' जो आज का एक विश्वव्यापी दुःखद यथार्थ है तो निश्चित ही इसका कोई न कोई कारण होना चाहिएः जिसकी विस्तृत विवेचना में न जाते हुये मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि इसकी पृष्ठभूमि में मनुष्य की उसी आदिम लालसा, तृष्णा को माना जा सकता है जिसके कारण वह अपने चतुर्दिक व्याप्त सत्ता को अपने से भिन्न, इतर मानते हुये उसका किसी भी सीमा तक शोषण करने को सन्नद्ध रहता हैं। यदि हम इस कारण को ठीक से अनुभूत कर लें तों हम सभी स्वाभाविक रूप से अन्यों से अपनी अभिन्नता का बोध करते हुयें सबसे सहयोग करेगें और यह सहयोग वर्तमान स्थिति में ***'घरों में रहते हुये' और एक दूसरे भौतिक अन्तराल (Social Distancing) रखते हुए कर सकते हैं।*** यह अवसर हमें जहाँ स्वयं को जानने में सहायक होगा, वहीं इससे हमें 'कोरोना' से उत्पन्न दुःखद वैश्विक एवं राष्ट्रीय स्थिति का अतिक्रमण करने योग्य बना सकता हैं।

आइये, हम सभी पूर्ण निष्ठा के साथ लाक डाउन का सम्मान करते हुए घरों में रहते हुए स्वयं को जानने का प्रयास करें जिससे सभी सत्ता के साथ अपनी अभिन्नता को अनुभव करते हुये इस दुःख का अतिक्रमण कर सकें।

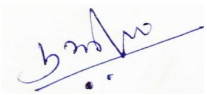

सुशील कुमार तिवारी
(विशेष कार्याधिकारी)
अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर।